भारत सरकार

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या: 2650

11 अगस्त, 2026 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

ओडिशा में रोगों की निगरानी और जन स्वास्थ्य प्रयोगशालाएँ

2650. डा. सस्मित पात्रा:

क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) ओडिशा में कार्यशील एकीकृत जन स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं (आईपीएचएल), वायरल रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक लेबोरेटरी और रोग निगरानी इकाइयों का जिला-वार ब्यौरा क्या है;
(ख) उक्त प्रयोगशालाओं और इकाइयों में उपलब्ध जनशक्ति, नैदानिक क्षमता तथा परीक्षण सुविधाओं की वर्तमान स्थिति क्या है;
(ग) क्या राज्य में प्रयोगशाला अवसंरचना और रोग निगरानी से संबंधित कमियों के संबंध में कोई आकलन किया गया है; और
(घ) उभरते तथा पुन: उभरते संक्रामक रोगों से निपटने के लिए तैयारियों को सुदृढ़ करने हेतु क्या उपाय किए गए हैं?

उत्तर

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (घ): ओडिशा सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार, प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-एबीएचआईएम) के केंद्रीय प्रायोजित योजना घटक के तहत, ओडिशा में प्रत्येक जिले में एक 30 एकीकृत जन स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं (आईपीएचएल) को अनुमोदित किया गया है। इसके अतिरिक्त, एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी) के अंतर्गत राज्य के सभी 30 जिलों में जिला निगरानी इकाइयाँ (डीएसयू) कार्यशील हैं। राज्य सरकार ने यह भी सूचित किया है कि सूक्ष्मजीवविज्ञानी की कुल संख्या 64 है और नैदानिक सेवाएँ भारतीय जन स्वास्थ्य मानक (आईपीएचएस) के अनुसार प्रदान की जाती हैं।

वायरल रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक लैबोरेटरी (वीआरडीएल) योजना को स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा वायरल और अन्य उभरती तथा पुनः उभरती संक्रामक रोगों के निदान, निगरानी और अनुसंधान के लिए प्रयोगशाला क्षमता को सुदृढ़ करने हेतु कार्यान्वित किया जाता है। वर्तमान में, ओडिशा में छह वीआरडीएल नामतः, आईसीएमआर-राष्ट्रीय

स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर (क्षेत्रीय स्तर); श्रीराम चंद्र भंज मेडिकल कॉलेज, कटक (राज्य स्तर); एम्स, भुवनेश्वर (राज्य स्तर); शहीद लक्ष्मण नायक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, कोरापुट; वीर सुरेंद्र साईं इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च, बुर्ला, संबलपुर; और महाराजा कृष्ण चंद्र गजपति मेडिकल कॉलेज, बेरहामपुर कार्यशील हैं। इन प्रयोगशालाओं में स्वीकृत मानव संसाधन 6 से 8 कर्मचारियों तक का है, वार्षिक नैदानिक क्षमता 3,000 से 8,000 जांच तक है और ये अपनी स्तर के अनुरूप आणविक, सीरोलॉजी और कल्चर सुविधाकेंद्रों से सुसज्जित हैं।

ओडिशा सरकार ने यह भी सूचित किया है कि प्रयोगशाला अवसंरचना का मूल्यांकन राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक (एनक्यूएएस) के माध्यम से और कायाकल्प के तहत मासिक निगरानी के माध्यम से किया जाता है। राज्य ने यह भी सूचित किया है कि प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-अभिम) के तहत प्रयोगशाला अवसंरचना को सुदृढ़ किया गया है और सभी 30 जिलों में रोग निगरानी तथा असामान्य घटनाओं पर अनुक्रिया के लिए जिला निगरानी इकाईयां कार्यशील हैं।

इसके अतिरिक्त, वीआरडीएल योजना के तहत, अवसंरचना, उपकरणों, परीक्षण सुविधाओं, मानव संख्या-बल, नैदानिक कार्यभार, गुणवत्ता प्रबंधन प्रणालियों, जैव सुरक्षा, प्रशिक्षण आवश्यकताओं और प्रकोप अनुक्रिया क्षमताओं के संबंध में प्रयोगशाला की अवसंरचना और रोग निगरानी क्षमताओं की समय-समय पर समीक्षा की जाती है। योजना के तहत अवसंरचना, उपकरणों, मानव संसाधनों, प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता को सुदृढ़ करके पहचाने गए अंतरालों का समाधान किया जाता है।

राज्य द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, सरकार ने उभरती और पुनः उभरती संक्रामक रोगों के लिए तैयारी को सुदृढ़ करने हेतु विभिन्न उपाय किए हैं। इनमें आईडीएसपी के तहत राज्य और जिला निगरानी इकाइयों को सुदृढ़ करना, एकीकृत स्वास्थ्य सूचना मंच (आईएचआईपी) के माध्यम से वास्तविक समय में रोग निगरानी, रैपिड रिस्पांस टीमों का गठन और प्रशिक्षण, एकीकृत जन स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं को सुदृढ़ करना, नैदानिक सुविधाओं का विस्तार, स्वास्थ्य कर्मियों का क्षमता निर्माण, मानक संचालन प्रक्रियाओं और रोग-विशिष्ट दिशानिर्देशों का प्रसार, वन हेल्थ एप्रोच के तहत अंतर-क्षेत्रीय समन्वय, नियमित समीक्षा और सहायक पर्यवेक्षण, और जोखिम संचार और सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) कार्यकलाप शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त, वीआरडीएल योजना के तहत, सरकार ने तीन-स्तरीय प्रयोगशाला नेटवर्क को सुदृढ़ करने, आणविक, सीरोलॉजिकल और जीनोमिक नैदानिक क्षमताओं का विस्तार करने, प्रयोगशाला अवसंरचना, जैव सुरक्षा और गुणवत्ता प्रबंधन प्रणालियों को सुदृढ़ करने, वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यबल के क्षमता निर्माण करने और प्रकोप के दौरान नमूना रेफरल, पुष्टिकारी परीक्षण और अंतर-प्रयोगशाला समन्वय की सुविधा प्रदान करने सहित उपाय किए हैं।

******